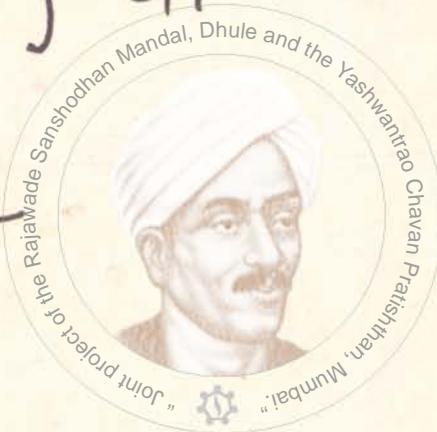
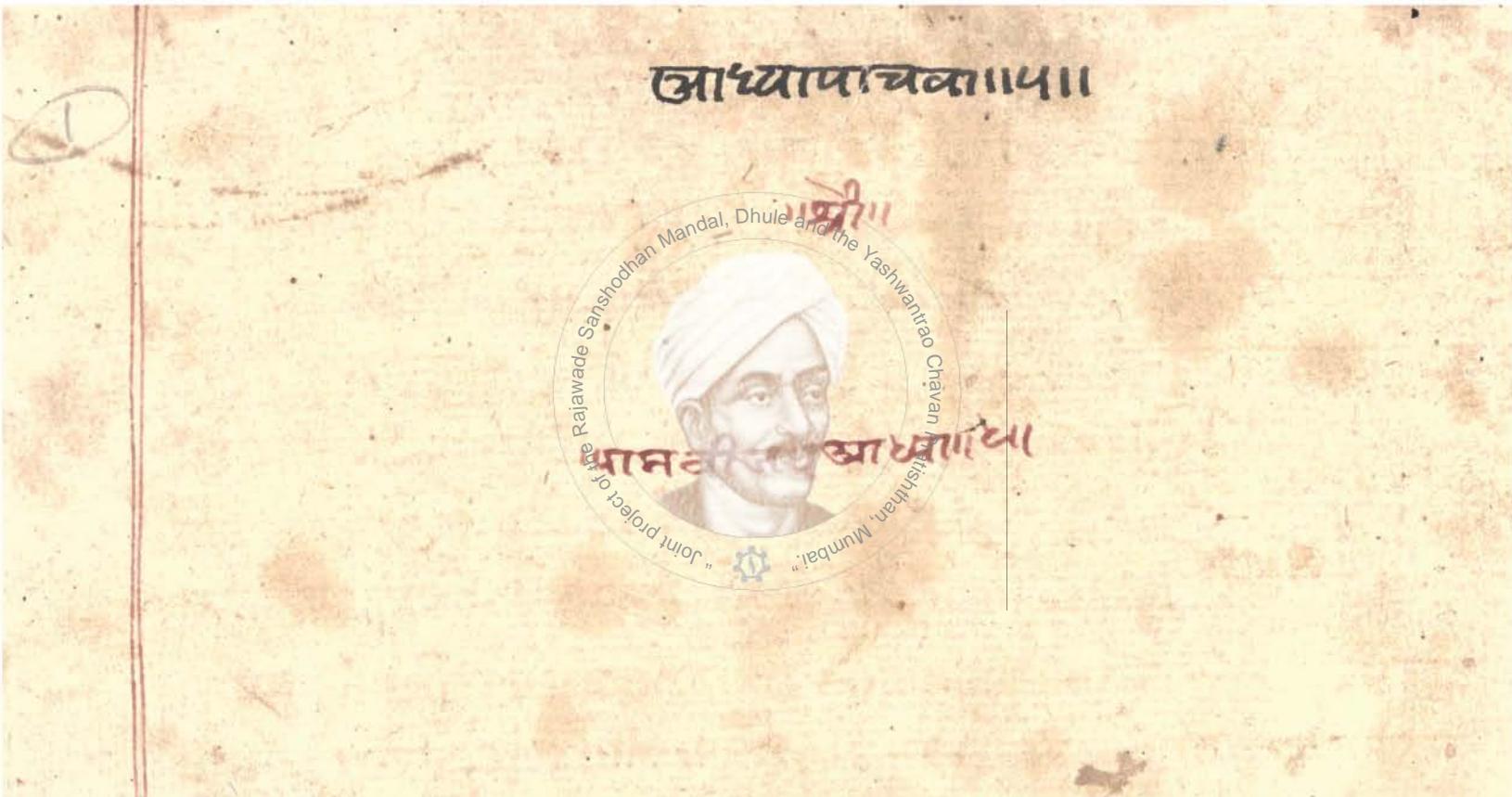


आद्याय वा

३६५



आयोगाचक्र ॥५॥



(v)

श्रीकौशल्यानंदनायनमः॥ श्रीरामव्याप्तेजुंजा॥ तेऽन्वी विश्वाकृदिव्यजाहाज
 यस्मिन् वरवपाह सहजा॥ नवविधभूतिवेषा॥ येवयेकारवपांज्रांता॥ वैसले
 आनुतापित्ताहां भक्ता॥ प्रेमाद्वेषो द्वरी प्रदक्षिता॥ पात्रवित्तमुमुक्षते॥ अथ
 शंखपूर्णधार निश्चीता॥ स्वयंज्ञाया र्ण लक्ष्मीरुद्राश्च॥ तेऽन्वी परपारासीनेता॥ निज
 रसावैसउनिता॥ खारमान्वेनामगाउ व्रशाज्ञा वीगगमांदुनिवाउ॥ ऐ
 लीठाएैक्षतां पुरेक्षाऊं॥ नलये-॥ उड-॥ एनीक्षावी॥ दाजोजो श्रोत्सीसाद
 ग॥ तोंतोंरसवाटेजा पारा॥ ऐं पुष्पर्णीह वतांगे हिंविरा॥ वंदकांतापास्तर
 मुद्यधा॥ वृहस्पतिसारीरवावक्ता॥ मति भंदमीढगुणांश्रोत्ता॥ अर्थगेलीतेक्षासा
 ॥ जोनाहिंसादर श्रोतियासी॥ ऐसेंक्षानन्नं माजीरुद्धन॥ क्रोन्ही वनपुसे
 तयालागुणा॥ तैसेमतिभंदपुटेंश्रवण॥ करणं स्याच्च प्रकारं॥ ऐसीजन्म

(28)

व्रेत्तीस्यादिष्ठ ॥ परीजेवणार वैसलोरोगीष्ठ ॥ तरीते सुगरपीवे द्वाष्ठ ॥ शुन्ध
स्थानिंदृउत्ते क्वं ॥ त्राउरसंजनें परीक्षे ॥ परीतो जंड जागो कायेवरं ॥
यं व्रगत्तिसुन्दर ॥ हीरने उनिठेवि लाए ॥ कवित्व समरीं रलहृष्टं ॥ याचे
परीस्मवज्ञाते यं उत ॥ मतिसंहुती उत्तिश्चीत ॥ यां सीपरीहानव लहे ॥
सुधरसउव्रुं वो तिला ॥ भास्त्रासिद्धपूर्ण द्वावि ला ॥ किंदिव्यमंवद्रघात
ला ॥ की ताभुंसीसने उनिसां ॥ जागामे समरीली आम्टनप्रकं ॥ उद्धरसी
सो लिंवकैकं ॥ क्रीजे मरत्यश्चाप्यनजल ॥ यासीक्कजीले अर्थजेविं ॥ भास्त्री
आनवर्दरत्नमाढा ॥ घातलि दिवागीत्यागाढा ॥ कीक्कस्त्रीटिळवरेखी
ला ॥ शुक्रम्बेलुहुमी ॥ तैसिमतीमंदाषु देंक्षया ॥ वाग्देवि मंतो गोबोल
तां ॥ जैसीपद्मीपंगीजदुहिता ॥ बांटप्रति दिधली ॥ नामनपात्रामानिनीर

(3)

वदाकांक्षीना हेस्ति रा। तरीतु मंही भन्तवरीष्व बलुग्॥ क्रथासादरपरि
 साहाय्या जाधी च मुक्ताप्रावरीसुवासा॥ जाधी च हिग्नापंतीपरीस
 ॥ तैसा जाधी च लुर की प्रेमरस॥ श्रीरामा श्रीरामेतत्॥ आसेवौ शाश्वा
 पट्टवेगंति॥ क्रथासुरसदरीलुसंति॥ संगितचुष्णीरामां वीजमस्ति॥
 बंधुसहितसर्वही॥ १॥ जो प्राप्त सीजाइव वापिता॥ यासीदवारश्चिताकौश
 अमाता॥ भन्ततभावयातत्त्वता॥ जाया॥ रेगाजीप्रगट्टा॥ २॥ दंशारथाम्बे
 नाम्यथोग॥ रत्नजटितपालवसुंदरा॥ व्यहीलां वविलेप्तीक्रम॥ वौघेकु
 मरनिजातिस्तेष्यं ३॥ तेगावेंद्रिवसींपाक्षां पद्मुडविलागमराणां जो जा
 गम्पवेहपुराणां जो जो द्युणोनिहात विति ४॥ जो जादिमायेवानिजवर
 जो एकाणपुरुषपरात्यरा॥ जो प्राप्तवक्तव्याठवृक्षवलुरा॥ जो जो द्युणोनिहा



३८
लविति ॥ जेष्ठनवाहिक्षेवंधाना ॥ जोस्तजानिपतिवें बीतना ॥ जेष्ठ
उरस्यक्षेदेवर्वेन ॥ जोजोस्मणोनिहात्रविति ॥ ॥ भ ॥ जेष्ठाहिप्राये वा
निजवरा ॥ जेष्ठुराणापुरुषपरात्पर ॥ जोमाणा-वक्त्रवक्ष्यतुरा ॥ जो
जोस्मणोनिहात्रविति ॥ एता ॥ जोआपदश्चातवदनां ॥ तोप्रेमपाठां
गमराणां ॥ जवकीज्ञात्यात्तुरां ॥ सुवारीनिंकोणत्यारैक्रा ॥ अपद्ध
त्याभांवंशासुकासिति ॥ उत्तरांदित्याः मांउमानि ॥ उपरतिसहिद्याक्रासी
नी ॥ जोजोशङ्खंहात्रविति ॥ ॥ निवांगरीश्वस्वस्यस्ति ॥ मुमुक्षानि
क्षाननां प्रतीती ॥ सुल्लीनलासमधीसङ्गति ॥ लीक्रानातिस्वानंदे ॥ ८
यस्यवृपतिसध्यमांवैवरी ॥ गत्तरेणाति क्याहीनसी ॥ क्याहीमुक्तिनीर्धि
ति ॥ वहुंकोवंतितस्ता ॥ ॥ घरांतया मुख्यासुंदरी ॥ इतरबैसाधावहे



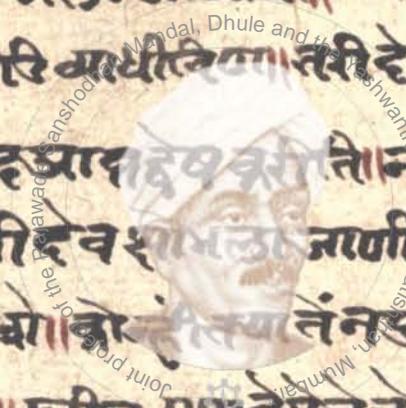
री॥ जग्न ति स्व प्रश्न सु सीनारी॥ या सीरा वणारी दीपेनां॥ १८॥ आसं भाव
 नावी परीत नावनां॥ विशेषता गत याता जग्नां॥ तु यदीदा विश्वाहा पणां
 ॥ बहुं त ज्ञापाते जासो विं॥ २१॥ वारा साक्षा योहनारी॥ गल बलाकरी ति
 बाहेरी॥ वौ मधीदा विलिक्रवाक् सी री संतरी प्रवेशनदे॥ २०॥ आसो
 स व्रक्त निति दिनी॥ वौ अटी क्रोडा उत्तरी रानी॥ वस्त्रं आकंक्षार अरुनी॥ स
 दनां जापुल्या गलीया॥ २२॥ उत्तरायाधि सीजन्मलारघु पति॥ वीद्वंगसमां
 सीजाण वति॥ प्रब्रह्म विजाक्रुडक्रुडनिपउति॥ लं त्रेवरी आक्षमाता॥ २३
 ॥ त्रां पों लग्ले उं कानगगा॥ भुव्रं पहो येवारं वारा॥ उगों वीमोरि ले राजठ
 त्र॥ सभाप्रेत वत हिमत से॥ २४॥ नाहां द्वारं ऊंडिल लत॥ वावणा जों भट्टी च
 ठना॥ दही भस्त्र कि वेपउता॥ मुहुट खारे उगे यही॥ २५॥ नावा क्रामिपाहे आरी

"Joint Project of the Bhujwala Sanskrut Mandal, Dhule and the Vaidika Sanskrit Research Institute Mumbai"

मांत्रिन्द्रिया॥ तोंजांतनहि सेसीरकमठ॥ मृजमंदिरावरीप्रालंगल॥ दीवा
भीतेंबो भासि॥ ४॥ स्वप्रहेवमंदादी॥ मर्द्वटेंतोडिलीकलसरी॥ दीगतवी
धाउयांद्वानती॥ वोरीभरीतिधुकीतें॥ ५॥ उछाटसुलेवतंशु.पां॥ दे
खतिजालीम्येक.पां॥ खीतपरहीदशवंठप्रापां॥ लाणझ्वरसोभठा॥

॥ ६॥ इश्वररुजालीया पाठीप्रापा॥ नसाते चविश्वेंयेते परा॥ माहंरस्त्वेंहो
तिगरा॥ क्रोधहीनपुसेतयतां॥ ७॥ जालेंद्रधरो क्रावरी॥ तेलुहोनिजाये
नलभेकरी॥ उयच्छेंघावेंतहु॥ ८॥ अपन घालानियां॥ ९॥ वैरीणाकरी
सांपउवसे॥ आवदसापेउनिकुउथमी॥ विशेषवाटेकोधक्राम॥ तरीदेव
सोभलाजापावा॥ १०॥ सापुलेजेक्रांत्रुपुरी॥ यासीप्रापणारीहिलें
हारुण॥ आउलीयांधरपां पाचेवरपा॥ तरीदेवसोभलाजापावा॥ ११॥

५
 लाभस्त्रावरणं निषेउदमप्स॥ तोहनीवहोये हिवसंहिवस॥ पुज्यस्त्रानिं जा
 मानविशेष॥ तरीहेवस्त्रो नलतजाप्तवा॥ ४॥ आपुलीस्त्रीराज्यधन॥ वातु
 नोएुंगाहुजाप्तवा॥ हेवीरि वाधीत्रिता॥ तरीहेवस्त्रो प्रत्यजाप्तवा॥ ५॥ अं
 खंत्रीस्त्रीं अंधने॥ सुहुद्यादहेष्वत्रिति॥ नसतां वेक्तारग छांपउति॥ स
 दात्रठमवाटेवीति॥ तरीहेवस्त्रो नलतजाप्ती
 आस्ते॥ बोलेंजातां मति भ्रंशो॥ बोलेंतय तंनुस। तरीहेवस्त्रो नलतजाप्ती
 जो॥ अयोहुद्यपवीयेहरीद्र॥ स्त्रीस्त्रपणोकेगतनेत्र॥ हुरसोनिउयेस्त्रीत्तिउत्र॥
 तरीहेवस्त्रो प्रत्यजाप्तीजो॥ ६॥ आसोउंवेमाजिगवण॥ संगेप्रधानांसि बो
 लाडन॥ आहोपात्रीसावधान॥ लंकानगररक्षावें॥ ७॥ आयोध्येस्त्रीरामज
 मेत्ताल्लाल्ला॥ वसविराजतिसदाप्तव॥ ८॥ इडुनत्रीकाळ॥ शीरसुंबक्तसाव



इनी॥४॥आधीव्याधीरहितलोका॥नहींवेसादीद्रुःख॥शुद्धपर्णी
 आपारपीका॥योक्त्रांलागलेंतेधवां॥ग्ना॥अवतरतांतगन्निवासजाणा॥
 जनजरारहितजालेतरणा॥आविघापत्यमुच्चिदुना॥हेत्ताधरिजालेदै॥५॥
 हीदीजालेभाग्यवंता॥मुर्वतेकोठकेपतिता॥कुरुपतेस्वरूपवंतहैसीप
 मानतेजस्वी॥६॥अवतरतांश्रीसामा॥किंत्राप्रगेहेकोधक्षाम॥आयोध्यावासी
 पसुक्त्रावपरम॥स्वानंरात्राजहरा॥अग्निहंप्रकाशतंप्रभाकरमग
 कैवाहोअंधःकारा॥जागावरमाहोत्तांकरा॥पक्षोनिजातित्वरेने॥७॥विं
 बोलतांजानवेशांता॥सद्गुरुमत्तहोतिकुंटीता॥किंत्राहि सद्विवेकहोतप्राप्ना॥
 मंसारदुःखवितुव्येष्टना॥कौप्रवेशातांवैराग्यवृपांति॥हृष्वामक्रोधपूर्ति
 ॥तैसअवतरलाश्रीरघुपति॥होयदुक्ताळतिप्राले॥८॥जासोदशारथावे



(6)

सुत॥ येवामार्गं येवरां गता॥ हकुहकुवोदे वरलता॥ संतोषात्मात्मपिता॥८॥
 ॥ पत्नवबंद अंगादांता॥ परस्परं हातधरं विवालता॥ येकास येकपाहो निहां
 सता॥ बालभावें कृष्णीयां॥८॥ द्वादशमात्रमीराहो नीयां॥ वो घासी बोलुवि
 जे वावया॥ तवंते जातिपक्षानि यां॥ धात्रिमाया धरी मग॥८॥ यो यां वीमुखें
 धुडनियां॥ भोजनां सि बै सवितमाया॥ तद्वारणा वीकाया॥ पुत्राउतागिया
 हात॥८॥ द्युगोक्तोणपुण्यावेष्वे॥ दुवी नींजा वरलों बहंत॥ तरी यहै यो
 वेआदि त्या॥ अवतरले पाइयोटी॥८॥ जाले आठावर घा च सुंदर॥ वो
 घां समान वस्त्रें आळं ज्ञारा॥ वीमर्णी वधनु छें परीकरा॥ वीमर्णी वधनु छें वीमर्णो बाण
 तिति॥८॥ वीमर्णायां मर्ति वीमर्णो वीहून॥ वीमर्णी वधनु छें वीमर्णो बाण
 ॥ वीमर्णो नेपुरं रुणाशुण॥ पाइंगर्जति त्रौघप्ते॥८॥ वीमर्णो पीतां वर कं

Joint Project of the
 State Akashvani, Mumbai,
 Mandai, Dhule and the Yogi
 Mantra Chavasai

६४
मीम्पेवक्ता॥ वीरभद्रीपदवें मुत्त प्राज्ञा॥ वीरप्रथा द्वोवक्ता वरमेळा॥ राजा
न्नोंवंताम्भोभल्ला॥ उस्सांतरवेचति रघुपति॥ धोवक्तुष्ट्रें मित्रपत्रें वरी
धरीति॥ येद्वच्चामरें वरीदाकीति॥ राजनीति व्रह्मणीयां॥ घनश्रीगमज्ञा
धीसोरिकाणा॥ पाठी सोरि तत्र सुमया॥ प्रजागं भरथश्चात्मृद्धा॥ भेदीति वी
हानतैसंचीद्या॥ इहोनिवारे राजदा॥ वौवधेवहां वीरा वित्तिकार॥ आ
सुरप्रतिपां व्रह्मति शोरा॥ त्रीरेत्यवीर अविभूती॥ एष देहांति व्यादि व्यक्ति
॥ सर्वं वरीष्टजेवांगर्जति॥ त्रिवाष्टपाति रघुपति॥ जप्तुक्तजापी व्यप
ठत्वें॥ आसो वौधां वें मुंजीवंधन॥ श्रीवाच्चिष्टामिष्टान॥ आपारमेळ
उत्तिव्रह्मणा॥ अरजनं द्वन्द्वरीता जला॥ ए॥ श्रीगमां व्यादत वंधहोता॥ अ
ष्टमांसिद्धि तेश्चं रावत॥ व्याहीरिद्वस परीयंता॥ युन्यपदार्थनदिसकाही॥

Joint Project of the
Shri Rajawade Sanskruti Mandal, Dhule and the
Yogmantra Chavhan Prishi
Numeral

द्युम्हनोकारयुनाथ॥ यासीद्वाल्पवाचालीतेयज्ञोपदित॥ गाइत्रीम्
 त्राम्भज्यत॥ वेह कंद्यमाहमाज्ञोऽप्त०॥ एसंजालियांत्र तर्वधन॥ वाशिषा
 पासीजनुहीन॥ बहुवेदावंशाध्यायन॥ क्रेत्रांसंपर्णवौवांही०७१॥ उयासीव
 वीतांवेदजालेवेतोपान्तु यामि० इषटा॥ आध्यायनसांगतांसांक्रां
 गुरुसीनपेसर्वश्चाप्तमा० प्रभारंह इश्वरसंततता॥ संपूर्णजालेति०
 श्रीरथुनाथ॥ मग्नुसोनिवार्य० एहाररथा॥ श्रीरामतिश्रीनिघलाद०८१॥
 क्रेत्रावर्षतेर्वाटा॥ व्रावेंद्राल्पप्रभाण॥ हेंजागोनियांरघुनंदन॥ ती
 श्रीटांसिनिघला०७८॥ तीर्षीटांवेंधुवौघेजण॥ निघलेसवेंआ
 परसेन्मा॥ सवेंदिधलासुमंतप्रधान॥ आसंभावधनवांटावया०७५॥ सव
 लगाइबेभारानानावल्लेंगाकंकारा॥ तीर्षीवांटीरघुविरा॥ यावका

"Original Project of the
 Sanskruthi Mandal, Dilute and the
 Vaidika Central
 Library, Mumbai."

६८
सीसन्माने ॥७८॥ ज्यातीशविसैसामहिमांयुणे ॥ श्रीरामकरीतैसंज्ञी
विधाना ॥ सादेविसद्रूढतीर्थं पावन ॥ तोरपुनंहनतीर्थंहोंडे ॥७९॥ लोक
संगहार्षकारण ॥ तीर्थंहिंडे श्रीरामसनमोहन ॥ तितुकीतीर्थंक्रिराश्रवण
संतश्रोतैसर्वहीं ॥ पांक्राम्बिवेष्ववरनिर्मल ॥ त्रीबक्कउज्जनीमहंक्राम
ऊँकारमस्त्रेष्वरजाप्तनिव ॥ वद्विवेहारष्ट्येष्वरा ॥८०॥ नागनाथवै
जनाश्चयोर ॥ महिकाजुनभीमाजंतरा ॥ सेमनाथगमेष्वर ॥ ज्योति लिंगे
द्वादशाहि ॥८१॥ आयोध्यामस्त्रहोरे ॥८२॥ क्राद्विकांतिप्रावंतिनगरा ॥ हमा
वतिमोक्षगोमतितिरा ॥ सन्तुरीष्वप्नानुक्रमे ॥८३॥ तीर्थराजसुख्त्रीवेणी
॥ पंचप्रयागपुण्डरवाणी ॥ ब्रह्मप्रयाग द्वर्गप्रयाग माघहरणी ॥ उत्तप्रया
गसमर्थ ॥८४॥ अदेवप्रयागवीवप्रयाग पापहरण ॥ नीमीव्यारव्यधमरिष्य



(8)

पंचकारणा ब्रह्मसारवयवेशरत्य। बद्रिकाष्ठमपाकनतो॥१॥ समुनां सरस्व
 ति भ्रगीरथी॥ तोतं प्रीहृष्ट्यां भीमरथी॥ तावीनर्मस्तोत्रावति॥ प्रवराष्ट्य
 वंतीमंदाद्विनी॥ २॥ आनंदवर्धने पयोहसी॥ पीनातव्वितुंगाविलिङ्गानात्मानि
 ॥ ३॥ तु माक्षाद्वावरे पयश्चनी॥ सवर्णसरसी शुशुमाक्षा॥ वैत्रीलिङ्गातांक
 पठींश्चारवति॥ आपीक्षतुंगभद्रसंस्तवती॥ सादित्रीरेवारेवाक्षुभनी॥
 योन्यां वेशवेशवतिमनुप्रहरा॥ ४॥ यद्याहुसीहीनीनलीनि॥ गंडकीवार
 उवैतरंगी॥ सोमनद्वीवनदतापहारणी॥ ओषधनदेववरा॥ ५॥ द्वार
 ां आकृणां प्राचीपुरंदरी॥ वेत्रवतिसत्तउग्नद्रुमरी॥ स्वामिंकात्तिकी
 एव दृतमीष्ठीवरी॥ विश्वात प्रवाहयणं वा॥ ६॥ वज्रवालि काष्ठम
 हरणंती॥ महिंद्रद्वाळी त्रीषुदी मंत्र कौण्डी॥ नीरावति सुरन्ती त्रां वेद्वारीं ७

४८

॥जयंते जायंते आहिर्णवी॥ व्याना दक्षी जायंते जातं कृतदा॥ प्रल्लु सर्वंति
 द्वा त्रीपदा॥ धायंते वाणनदि सुखदा॥ अनुक्रमं नद्यासर्वा॥ १०॥ ग्रोषाद्री आ
 यंते ब्रह्माद्री॥ मूळपीठ पवित्र सीक्षाद्री॥ विंध्याद्री जायंते माद्री॥ मध्यस्तोवरी
 स्त्रानदाना॥ जारवायं वल्लभान ददन॥ क्रमकालये त्रीदं वरेषुर्णा॥ जाग
 स्यष्ट्रमपावन॥ श्रीरंगपद्मान-श्रीमीवंता॥ ११॥ जनार्दन दक्ष-पांकुमारी॥ त्रीव
 वंतीब्रह्मावंती सुंदरी॥ भैरवत् पर्युषीवरणी॥ ग्रांवो हार देहो हाय॥ १२॥ हि
 रथपनदि संध्यावदा॥ ब्रह्मांत्रितर्मसंभवत्य॥ ब्रह्मयोनी एथवृत्तरीष्टा॥ कुरु
 शेत्रविदु तीर्षयेण॥ १३॥ पर्मालयद्वयालयप्राप्ता॥ जासागर सींधु संगम॥ कौंउ
 यपुर अंतिकाग्राम॥ प्रेमपुरमार्त्ति वाया॥ बरल्लादल्लो कवलं क्रेष्टरी॥ वीरा
 स्वरवीणी इत्तांवरी॥ प्रमर अंतिकाजाङ्गा सुखवी सुंदरी॥ वीतांवरि माहात्रा



श्रीरामाचार्णवी
 संशोधन और प्रकाशन का लक्ष्य
 श्रीरामाचार्णवी

(१)

नी० ॥ जोग गाहे की भैरवि ॥ व्रह वीरवासी निसांभवि ॥ सप्तसंगीतोदीदे
 वी ॥ हिंगु बज्या आंती व्रमन्त्याणि ॥ यांग हे वमोरेश्वरा ॥ उत्तरे दार वटेश्व
 र ॥ आसुये वटति शुक्रापार्वति ॥ त्रिकुरा वर्ष संहरयो ॥ तुहरी हरस्वरन्त
 सीहुर ॥ मुल माधवि जानेश्वर ॥ वत्रपा गीतुदनुलेश्वर ॥ उन्हाटनागत्वा
 गोत्मेश्वरतो ॥ ४७ ॥ सप्तये जनत्वा इश्वरा दशष्ठा प्रणग माधवेश्वरा ॥ मिहव
 रधतपापसि देश्वरा ॥ पर्वमग ॥ तिथे गजा ॥ ५० ॥ वैगाटपुष्कर माभेश्वर
 ॥ धुम्बवेटव्रकांकुरनारायणाशा ॥ मलयाश्वर पांचलेश्वरा ॥ सत्यताश्य
 पर्णीत्य ॥ ब्रीव वांति विल्लिंकांति ॥ मोसमठाश्रम काळहरीति ॥ वेदपुर
 गया आरुण्यांवति ॥ उउपीक्राष्ट्राइसर्वेश्वा ॥ भ ॥ त्रीपदि आहो वक्तव्यमि
 द्वाति ब्रीसत्य ॥ सुब्रह्मीणी द्विष्ठिं दामातांगपर्वत ॥ हंपीविस्तपास्तु तिं



८

ता॥ पंवासो वरनि मैका॥ श्री वित्त कुटुम्ब कुटुम्बो वारा॥ आंबुआयोधा
माहांकाउरा॥ क्षाल्य वंदी आधीहि ये परिवत्र॥ माहांडत्तमपापनावानी॥ न
हरीहरतीर्थजंलुकेश्वरा॥ आनंतद्वाविमकेश्वरा॥ ममुरावीकर्णप्रभाकर
॥ विश्रांतिवनतपोवन॥ ८॥ तुंभक्षोत्तमजरथ॥ मातुलंगधुङ्कवेटवत्री
विक्रमतीर्थ॥ मुहलमांधाव देयाज्ञानाथ॥ पंदरीसेत्र-वंदभणा॥ ७॥
आत्रीक्षोत्तमाधीकर्णपुङ्क॥ नागरारंगजुगुल॥ आसखुरीनेपालती
त्रीपल॥ मशनक्षालेश्वरकुट्टाएन ९॥ श्रीनासीक्रमाश्रीमातुलंगयोग
॥ वीताज्ञानीता-वीहंवरेश्वरा॥ द्रष्टव्यद्वाहहरिहार॥ आदित्यवैश्वानर
माहांतिर्थे॥ नाक्रस्यानन्दाद्योश्रीधर॥ इतुकिंतीर्थं कर्कणीरचुविरा॥ आ
योध्येशीज्ञालादिनोहारा॥ परतोनियांगजरेसी॥ १॥ वादिष्टासिसाष्टांग

(१०)

नमन॥द्वारथासीयातन्मद्वारण॥तीघ्रीमातासीरचुनंहन॥कृतिन
 मनजापेदत्येष्टा॒तीर्थेकृत्यंगीजालीगांत्रेष्टामा॑॥सदाविरक्तज्ञायीनि
 ष्टामा॑॥नवेत्तेलोविक्तसंभ्रम॥वैराग्यपरमवाणालें॥३॥शाउरसंयन्तेउत्त
 मासरनें॥हंस्यविनोहस्तुंशारगामनें॥नावउम्भायागमनागमने॥येकांत
 युर्वग्रावेड॥१८॥नावउस्त्रीयांतेजाषपा॑॥नेष्टोकामिन्द्वेविलोकन॥ना
 शाग्नीदीषीहेउन॥जानंदधन्तेलत॥४॥पावप्रकारेतेघेवंधु॥माहांवि
 रक्तविष्वामसाधु॥श्रीरामत्रोवाक्यात्यानंदु॥तीघ्रासीहीमर्वद्वा॑॥५॥तं
 वंतोप्रतिश्रद्धीकरणार॥सिइश्रपवत्तिगांधीजकुमर॥माहांतपस्वी
 विश्वामित्र॥आयोध्येसिपातलगा॑॥जाल्याएकोनगांधीजसुत॥सामेसा
 धांवेदव्वारश॥साक्षांगकृत्यंगीप्रयंगीपात॥हेमाढीगात्रहिधले॑॥६॥द्वी
९

(१०८)

श्रीसदेवोनिक्रात्मा ॥ जोनउठेकरीजायान ॥ सा वा आयुष्या मीहो
 ये बंउण ॥ आलेंमगाजवढी लाखें ॥ ७ ॥ जोक्रात्माणंसि नैंदि आयुष्या
 न ॥ तोडुसरेजल्ली होयेश्वान ॥ वीत्रें गोधीत्तजा तित्पच्चेसदन ॥ कोठेनांद
 तित्पच्चानि यां पदातैमानकृत्तादपरथ ॥ माहात्मजवेवक्त्रवृष्टाभृता
 कौवीकृष्णाधरनिहात ॥ मैहुसानिरेसविलास ॥ ८ ॥ वहें आळंकाराहेडप
 वरण ॥ हेउनि कुजीलादिश्वामित्र मानां प्राविजात्मपावपुत्र ॥ धर्मारिवस
 आजीना ॥ ९ ॥ त्रिविसद्मवरण नाद रारथ ॥ आजीनजहर्षवाटेबहंत
 तुम्बेपुरविनमीमनोरण ॥ नाहीइ औत्तमागामज ॥ १० ॥ श्रीलोनिक्रात्म
 स्काश ॥ प्रगाजासिर्वाहदेतिविश्वामित्र ॥ सूर्यवंत्रापुषणतु आयार ॥ आनं
 तवृष्टानकुजलाती ॥ ११ ॥ तुष्टीपुष्टीहोकुजलातीवहुंत ॥ धर्मेणैश्वर्ये दे

Mandai, Dhule and the
 Nivaranwadi Chavhan, Munshi
 Project, Pune, Maharashtra
 and the
 Research Project
 on the
 Chavhan, Munshi
 Manuscripts



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००९ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com